मीडिया : राष्ट्र का चौथा स्तंभ

डॉ. संध्या गर्ग,

एसोसिएट प्रोफेसर,
जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

जनसंचार माध्यम किसी भी राष्ट्र के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय विकास से अभिप्राय किसी राष्ट्र की जनता के राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन में आए परिवर्तन और विकास से है। इस सारे विकास को केवल सरकार संभव नहीं बना सकती, इसलिए मीडिया जनता को इस पूरी प्रक्रिया से जोड़ने का एक माध्यम बनता है। यही कारण है कि मीडिया का चौथा स्तंभ कहा गया है। 'चौथा स्तंभ' विशेषण बुर्के ने दिया जब उन्होंने कहा– "जीमतम ूमतम जीतमम मेजंजमे पद चंतसपंउमदजए इनज पद जीम तमचवतजमत हंससमतल लवदकमतए जीमतम ेंज ं विनतजी मेजंजम उवतम पउचवतजंदज जींद जीमल ंसस"[1] अभिप्राय यही था कि मीडिया किसी भी राष्ट्र के लोगों के लिए वे कार्य करे जो कि संसद न कर पाए। वह जनहित का संरक्षक हो और प्रशासन की कार्यप्रणाली पर सदा निरीक्षक की सी दृष्टि रखे।

मीडिया लोगों को सूचित करता है उसके बारे में जो हो रहा है और जो हो सकता है। जटिल मुद्दों को सरल बनाकर प्रस्तुत करता है ताकि लोग उस पर अपनी राय बना सकें जो कि लोकतंत्र के लिए बहुत आवश्यक है। इसके माध्यम से वह महत्वपूर्ण निर्णयों पर जनता में वाद–विवाद को प्रोत्साहित कर सकता है। और अन्याय तथा मानवीय संवेदना के मुद्दों पर एक आम राय बनाने में मदद कर सकता है। वह राजनीतिज्ञो को भी यह अवसर देता है कि वह मीडिया के माध्यम से अपनी नीतियों व निर्णयों को जनता के सामने प्रस्तुत कर उनसे अपने लिए समर्थन मांग सके जो कि फिर से लोकतंत्र के लिए एक आवश्यक तत्व है।

1948 में यू.एन. ने एक कान्फ्रेंस में यह घोषित किया कि सूचना का अधिकार स्वतंत्रता की पहली शर्त है और 1962 में हुई एक कान्फ्रेंस में यह पाया कि अभी भी विश्व का 70 प्रतिशत भाग एक पर्याप्त सूचना पाने में असमर्थ है और तब यू.एन. ने सभी देशों को आह्वान किया कि वे मीडिया के विकास को अपनी योजनाओं का भाग बनायें। और उन्होंने कहा कि – "शिक्षा, समाज व आर्थिक विकास में मीडिया सूचना की महत्वपूर्ण भूमिका है।"

हर माध्यम के पास अपने संदेशों के लिए लक्षित श्रोता या पाठक होते हैं जिन्हें वह प्रभावित करता है – उनके व्यवहार में, धारणाओं में और फिर निर्णय करने में भी और इस प्रकार जनता और मीडिया में एक संबंध दिखाई देता है। यह संबंध जितना अधिक सकारात्मक होगा सामाजिक व लोकतांत्रिक विकास की गति उतनी ही तीव्र होगी। यहां यह भी ध्यान देने योग्य है कि मीडिया की इस भूमिका को कुछ शर्तों में बांधा जा सकता है कि नहीं। कुछ लोगों का कहना है कि मीडिया की निरंकुश स्वतंत्रता राजनीतिक व देश के नीतिक हितों के लिए भारी पड़ सकती है। वहीं अधिकतर इसके विपरीत राय रखते हैं। मेरा मानना है कि मीडिया को निष्पक्ष होकर अपने ध्येय की ओर बढ़ना चाहिए। सनसनी, प्रोपेगेन्डा व पक्षधर होकर समाचार प्रस्तुत करने वाला

मीडिया सामाजिक विकास में सहायक नहीं हो सकता, यह सच है – मीडिया की स्वतंत्रता को उत्तरदायित्व के साथ ही जोड़ना चाहिए।

मीडिया एक वाच डॉग की भूमिका निभाता है राजनीतिक पारदर्शिता व भ्रष्टाचार के विरूद्ध लड़ने में। वह लोगों के लिए बोलता है उनके हितों का प्रतिनिधित्व करता है तथा सरकार पर नियंत्रण भी रखता है। वह समाज के प्रति अपनी निष्ठा और वफादारी रखता है तथा सामाजिक हितों पर आघात करने वाली घटनाओं पर खुल कर वार भी करता है। कोवाच के अनुसार ''जबी रवनतदंसपेउ ंज पजे इमेज ीमसचे ंसमतज ं बवउउनदपजल जव बींदहपदह बपतबनउेजंदबमे ंमिबजपदह जीमपत सपअमे''[2]

वास्तव में किसी भी सामाजिक विकास में मीडिया की भूमिका राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक परिदृश्य से देखी जा सकती है। लोकतंत्र, सुशासन, राजनीतिक पारदर्शिता, विदेश नीति, मानवाधिकार, युद्ध, आतंकवाद व सामान्य समय में जनहित आदि सभी क्षेत्रों में मीडिया को अपनी भूमिका पूरी सजगता और ईमानदारी के साथ निभानी होती है। क्योंकि संप्रेषण केवल अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का एक माध्यम ही नहीं है वह किसी भी समाज के विकास का आधार भी है।[1]

मीडिया के साधन सरकार और लोगों के बीच में एक महत्वपूर्ण और प्रभावी पुल बनाने का कार्य करते हैं। एक सुशासन के लिए जनता का मुक्त होना, चुनावों का सफल निष्पादन, लोगों के प्रति राजनेताओं की जवाबदेही बहुत आवश्यक है। इसलिए मीडिया को चाहिए कि वह लोगों को अपनी चुनावी पसंद को व्यक्त करने और मताधिकार का प्रयोग करने के प्रति जागरूक करे। वह सरकार के कार्य करने के ढंग के प्रति भी लोगों को शिक्षा दे ताकि लोग जान सकें कि उनके हित में कार्य हो रहे हैं या नहीं। विदेश नीति व मानवाधिकार जैसे क्षेत्र भी बिना मीडिया की सहायता के सही ढंग से निष्पादित नहीं किए जा सकते।

जहाँ तक आर्थिक क्षेत्र की बात है, और स्त्री किसी भी समाज में वे लोग हैं जिन्हें आर्थिक विकास का लाभ सबसे कम मिलता है। मीडिया इनकी आवाज बनता है और यह सुनिश्चित भी करता है कि लोग इनकी आवाज सुने। सरकार को भी गरीबी हटाने के लिए प्रेरित करता है। बेहतर आय, बेहतर शिक्षा व स्वास्थ्य देकर इन दोनों वर्गों को किसी समाज के आर्थिक *विकास के साथ जोड़ा जा* सकता है।

सामाजिक विकास को वर्ल्ड बैंक ने परिभाषित करते हुए कहा है कि पूरे समाज को साथ लेकर चलने के कारण यह विकास स्थायी होता है तथा उन सभी क्षेत्रों को उन्नत बनाता है जो कि सहयोग और सहकारिता की भावना से जुड़े होते हैं। इस दृष्टि से मीडिया भ्रष्टाचार, सांप्रदायिकता, अपराध, और जनहित से जुड़े तथ्यों व मुद्दों की बात करता है। एक मजबूत और स्वतंत्र मीडिया भ्रष्टाचार के स्तर को भी कम करता है। किसी भी अर्थव्यवस्था के लिए भ्रष्टाचार एक दीमक की तरह होता है, वह उत्पादन गतिविधियों पर प्रभाव डालता है। ऐसे में मीडिया लोगों को सचेत कर सकता है और प्रभावी लोगों पर एक नजर रख सकता है ताकि वे भ्रष्टाचार न फैलाएँ। 2006 में 51 देशों पर हुए एक अध्ययन में पाया गया कि मीडिया को यदि स्वतंत्रता दी जाए तो भ्रष्टाचार के स्तर में 1.7 के मुकाबले 0.6 और राजनीतिक प्रभाव में 1.4 के मुकाबले 0.7 का अंतर दिखाई दिया।

ऐसे देशों में जहां नागरिक नियंत्रण क्षमताएँ उतनी सुदृढ़ नहीं है, वहां केवल शिक्षा का उच्च स्तर ही सिर्फ भ्रष्टाचार पर नियंत्रण नहीं कर सकता क्योंकि नियंत्रण के बिना तो राजनीतिज्ञ इसी शिक्षा का सहारा लेकर भ्रष्टाचार को और अधिक सफलता से कर सकते हैं। ऐसे

में मीडिया एक मजबूत नियंत्रणकारी तत्व हो सकता है।

सांप्रदायिकता किसी भी देश का बहुत संवेदनशील मुद्दा है। समाज के विभिन्न वर्गों में छोटे–छोटे मतभेद कब एक बड़े आंतरिक युद्ध का रूप धारण कर लें, अतः इस तथ्य के प्रति प्रत्येक सरकार बहुत सचेत होकर कार्य करती है। ऐसे में मीडिया का दायित्व हो जाता है कि वह निष्पक्ष होकर ऐसे मामलों में रिर्पोटिंग करे और ऐसे तथ्यों को बहुत सावधानी से उद्घाटित करे जिनसे सांप्रदायिकता की आग भड़कने का डर हो। अमेरिका और यूरोप में जातिय हिंसा ने अफ्रीका, एशिया व मध्य पूर्व में भी धार्मिक उन्माद का रूप धारण कर लिया था।

जन स्वास्थ्य के क्षेत्र में तो वह एक डाक्टर के समान ही भूमिका निभा सकता है। एड्स, सारस, इबोला, स्वाइन फ्लू जैसी बीमारियों में जहां बचाव ही सबसे बड़ा उपाय है, लोगों को जागरूक करना, स्वास्थ्य कैंपेन चलाना, विज्ञापनों द्वारा उन बीमारियों के लक्षण, बचाव के उपाय समय–समय पर प्रकाशित, प्रसारित करना मीडिया का कर्तव्य है। जैसे कि नेपाल और भारत में संयुक्त मीडिया कैंपेन के चलते हजारों लोगों ने कुष्ठ रोगों के बारे में अपनी धारणा बदली और इलाज प्रारंभ किया।

नागरिक सेवाओं का उपयोग करने वालों के लिए मीडिया सूचना व तथ्य पहुंचाता है जो कि नागरिकों को एक योग्य और जवाबदेह सरकार की मांग करने के लिए प्रेरित कर सकता है। समय समय पर सरकार द्वारा जारी योजनाओं को अगर मीडिया के माध्यम से प्रसारित किया जाए तो निश्चित रूप से एक विकसित देश के निर्माण में मदद मिल सकती है।

मीडिया की भूमिकाएं और कार्य बहुआयामी हैं। यह दमन का माध्यम बन सकता है तो मुक्ति का साधन भी बन सकता है। यह समाज को संगठित करने में अग्रणी भूमिका निभा सकता है तो उसे विभाजित करने का कार्य भी कर सकता है। यह समाज में परिवर्तन के पहिए को आगे बढ़ा सकता है, तो उसे पीछे भी धकेल सकता है।[3] लोकतंत्र का चौथा स्तंभ अपनी भूमिका अदा करे, इसके लिए जरूरी है नागरिक संस्थाएं सक्रिय भूमिका अदा करें। मुक्त प्रेस अपने आप में शक्तिशाली नहीं होता बल्कि जब नागरिक संगठन सक्रिय होते हैं तब ही शक्तिशाली भूमिका अदा करता है। बंदी ग्राम इसलिए इतना बड़ा मसला इसलिए बन पाया कि मीडिया और नागरिक समाज दोनों ही सक्रिय थे।

मीडिया सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक मुद्दों पर जनता की राय बनाने में भी सकारात्मक भूमिका निभाता है। सामाजिक बदलाव के लिए यह आवश्यक होता है कि कुछ मुद्दों पर जनता की एक राय बने। मीडिया के विभिन्न माध्यम इन मुद्दों पर खुला मंच प्रदान करके उसके विभिन्न पक्षों से जन साधारण को अवगत करा सकते हैं। जैसे कि पर्यावरण की समस्याओं को लेकर यदि मीडिया माध्यम निरंतर नई नई जानकारी देकर लोगों में पर्यावरणीय चेतना जागृत कर दें तो निश्चित रूप से विनाश के कगार पर खड़ी सभ्यता को बचाया जा सकता है।

मीडिया का काम है मुख्य मुद्दों पर बहस आयोजित करना, उन्हें जनता के सामने पेश करना। जनता को राजनीतिक नेतृत्व, राजनीतिक मुद्दे और सरकार के एक्शन के बारे में जानकारी देना। खासकर चुनाव के समय संकट, आंदोलन और प्रमुख नीतिगत घोषणा के समय आम जनता को समस्या के विविध आयामों के बारे में जागरूक बनाना। सूचनाएं प्रदान करना। इस तरह मीडिया मूलतः नागरिक मंच की तरह काम करता है।[4]

समाज के साथ–साथ राष्ट्रीय विकास भी मीडिया का उत्तरदायित्व है और उपरोक्त क्षेत्रों में कार्य करके मीडिया लोगों को एक बेहतर राष्ट्र क

संकल्पना से जोड़ सकता है। उसे ईमानदार से स्वहित न सोच कर जनहित में कार्य करता होता है। प्रोपेगैन्डा, पसंद व पक्षपात जैसे तथ्य राष्ट्रीय विकास में मीडिया की भूमिका को नकारात्मक बनाते हैं। मीडिया की स्वतंत्रता उस विकास के लिए आवश्यक है। उसे तथ्यों को गलत रूप से प्रसारित न करते हुए, किसी दबाव में न आते हुए, राष्ट्रीय सुरक्षा व हितों को ध्यान में रखते हुए सत्य को ही प्रकाशित करना चाहिए। इसीलिए किसी भी लोकतंत्रीय समाज में मीडिया की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है उसे लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में माना गया है। और किसी भी इमारत के स्थायित्व के लिए उसके चारों स्तंभों का होना बहुत आवश्यक है।

संदर्भ सूची

1. T. Carlyle On Heroes : Hero worship & the heroic in history (349-350).
2. Bill Kovach - Niewan Reborts, Harward University, Vol. 52, No.2, 1998
3. सामाजिक विकास में मीडिया की भूमिका, 31, कालूराम परिहार
4. 199 – उंद्वेर्तोइको चिन्ह शास्त्र, साहित्य और मीडिया, जगदीश चतुर्वेदी